विद्याभवन , बालिका विद्यापीठ, लक्खीसराय
रूपम कुमारी, वर्ग-दशम् , विषय-हिन्दी 🌷🌷
दिनांक- २५/६/२०

|| अध्ययन-सामग्री ||.

बच्चों, हमारा जीवन उतार-चढ़ाव के ताने - बाने पर बुना है । इस स्थिति में तनाव को पाल लेना हमारे स्वभाविकता में शामिल हो गया है ।

हमारे मन में जो तनाव प्रवेश करता है ,वह अधिकतम हमारी आंखों के माध्यम से प्रवेश करता है । आंखों का तनाव ही मस्तिष्क के स्नायुओं लिए सबसे बड़े तनाव का कारण है । अगर हम आंखों को शांत व शिथिल करने

का अभ्यास कर पाए तो हमारे कई रोग हमसे विदा हो जाएंगे ।।

अक्सर लोग मोबाइल पर अधिक बातें करते , फोन लगाकर संगीत सुनने का आनंद लेते हैं ।अधिक सुनने से हमारे श्रवणेन्द्रिय पर दबाव पड़ता है । मधुर संगीत जहां उन्हें तनाव मुक्त करता है , वहीं तेज संगीत हमारे श्रवणेंन्द्रिय को तनावग्रस्त करता है । हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि हमें अपनी इंद्रियों का उतना ही उपयोग करना है जिससे उन पर भार ना बढ़े । प्रायः हम अपने एक दिन में जितनी बातें करते हैं उनमें से कई बातें अनावश्यक होती हैं । थोड़ी सी सतर्कता से हम अपनी इंद्रियों को शक्ति-क्षीण होने से बचा सकते हैं ।

_कल की कक्षा में आपने **अट नहीं रही है** कविता के कुछ अंश की व्याख्या को पढ़ा ।आज शेष अंश की व्याख्या प्रस्तुत है।

काव्यांश :

आंख हटाता हूं तो
हट नहीं रही है ।
पत्तों से लदी डाल
कहीं हरी ,कहीं लाल ,
कहीं पड़ी उर में
मंद-गंध-पुष्प- माल ,
-पाट-पाट शोभाश्री
पट नहीं रही है ।

व्याख्या:. ***कवि कहते हैं कि प्रकृति के सौंदर्य की दृष्टि हट ही नहीं रही है पत्तियों से नजर हट नहीं पा रही है क्योंकि एक ही वृक्ष पर कई प्रकार के रंग बिरंगी पत्तियां दिखाई दे रही और सुंदर दृश्य से नजर फेरने का मन ही नहीं करता । संपूर्ण प्रकृति ने अपने हृदय पर माला सजा रखी हुई हैं क्योंकि कहीं कई आकार- प्रकार के फूल खिले हुए हैं । हवा में मंद -गंध (भीनी खुशबू) फैली हुई है । जगह-जगह वसंत की सुंदरता इस कदर बिखरी पड़ी है कि पूरी धरती पर समा नहीं रही है ।.***

विशेष : कवि बसंत के इस बिखरे वह अद्भुत सौंदर्य को अपने अंदर समेट लेना चाहते हैं ।उस सौंदर्य को अपने हृदय में महसूस करना चाह रहे हैं और वह चाहते हैं कि बाहरी जो सुंदरता है वह आंतरिक भी बन जाए तभी सृष्टि सचमुच में सुंदर होगी ।

भाषा-सौंदर्य :

- ***कवि निराला नी ध्वन्यात्मक शब्दों से नाद-सौंदर्य पैदा किया है ।***
- ***पंक्तियां छोटी और भावपूर्ण हैं ।***
- ***सार्थक, सटीक भावपूर्ण सौंदर्य से परिपूर्ण शब्दों का प्रयोग किया गया है का भी उचित प्रयोग है ।***
- ***समासिक पद का भी सुंदर प्रयोग किया गया है ।***

लयात्मक शैली में यह रचना गाने में सुंदर प्रतीत होती है तथा पूरी कविता में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग है क्योंकि

कवि ने फागुन का के सौंदर्य का वर्णन मामलों के सौंदर्य के अनुरूप किया है ।

धन्यवाद !